
#KAASHI
क्रांतिदूत
(भाग-2)
INDICA
डॉ. मनीष श्रीवास्तव

क्रांतिदूत भाग - 2

(काशी)

डॉ. मनीष श्रीवास्तव

सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
www.sarvbhashatrust.com

क्रांतिदूत भाग - 2
(काशी)
डॉ. मनीष श्रीवास्तव
ISBN : 978-93-93605-04-7
मूल्य-150.00/-
प्रथम संस्करण-2021

आवरण परिकल्पना : शिखा शर्मा
पृष्ठ आवरण : साभार गूगल

प्रकाशक
सर्व भाषा ट्रस्ट
J-49, Street No. 38, Rajapuri, Main Road,
Uttamnagar, New Delhi-110059
E-mail : sbtpublication@gmail.com
Website : www.sarvbhashatrust.com
Mob. : +91 81786 95606

मुद्रक : आर. के. ऑफसेट प्रोसेस, दिल्ली

KRANTIDOOT PART - 2
(KASHI)
by Dr. Manish Srivastava
Price : Rs. 150.00

क्रांतिदूत श्रृंखला भाग-2

काशी

शपथ

मैं अपनी सभ्यतागत समरूपता, निरंतरता और परंपरा का अपने विचारों, शब्द-वचनों का उत्सव मनाता हूँ।

मुझे विश्वास है कि स्वास्थ्य, आनन्द, शांति और स्थिरता की वैश्विक चुनौतियों का हमारे स्वदेशी विचारों में समाधान है।

मैं इस परम्परा को संचित, संरक्षण और प्रोत्साहित करने का सदैव प्रयास करूँगा।

इस प्रयास में अपनी क्षमता के आविष्कार, पोषण और दोहन हेतु साथी साधकों के साथ सम्बंधित तथा संयोजित होकर सहयोग करूँगा।

मैं इस यात्रा में अपने साथी साधकों के विविध विचारों को सम्मिलित एवम सम्मान करूँगा।

काशी के गुमनाम क्रांतिकारियों के चरणों में समर्पित

आगमन

“स्टेशन आ गया, स्टेशन आ गया!”

प्लेटफ़ॉर्म और डिब्बे में शोर मचने लगा था।

“कौन सा स्टेशन है भाई?” 13-14 साल के उस किशोर ने साथ वाले यात्री से पूछा।

“ई बनारस है भाई।”

किशोर ने खिड़की से बाहर झाँका और फिर कुछ सोचता हुआ उतर गया। इस किशोर का पिछले कुछ दिनों का सफ़र बड़ा हाहाकारी रहा था। अपने गाँव से भटकते हुए बम्बई और वहाँ से भटकते हुए बनारस, कुछ भी उस के मुताबिक नहीं हो रहा था।

“शायद यह शहर मुझे अपना ले!” किशोर ने अपना थैला उठाया और उतर गया। स्टेशन से बाहर निकल कर जाना कहाँ था यह अभी उस किशोर को नहीं मालूम था।

“भैया कोई धर्मशाला है आसपास?” यही सवाल तीन-चार लोगों से पूछने के बाद आखिर गोवर्धन धर्मशाला का पता चल ही गया, जहाँ रात गुजारी जा सकती थी।

वो किशोर जब रात को धर्मशाला में खाना लेने की लाइन में लगा तो साथ वाले ने पूछा,

“कहाँ से हो भैया?”

“यहीं से हूँ।”

“तो फिर धर्मशाला में क्या कर रहे हो?”

“मेरा मतलब पास के गाँव से हूँ, पढ़ने आया हूँ।”

“कौन गाँव?”

“भाभरा!”

“अरे वाह, मैं भी उन्नाव से हूँ। शिवप्रसाद मिश्र नाम है हमारा। क्या नाम है तुम्हारा?”

“शेखर नाम है। कहाँ पढ़ते हो?”

“पास ही में एक हिंदी विद्यालय है।”

“कोई भी पढ़ सकता है?”

“हाँ, मुफ़्त है सभी के लिए।”

“मुझे ले चलोगे?” किशोर अब उत्सुक था।

“हाँ, हाँ क्यूँ नहीं? वहाँ सब हम जैसे ग्रामीण क्षेत्र वाले ही आते हैं।”

रहने-खाने का इंतज़ाम हो गया था। पढ़ने का भी इंतज़ाम हो चुका था। जो रह गया था वो था एक अखाड़ा जहाँ जाकर वो अपने दिमाग और शरीर को मज़बूत कर सके। कुछ दिन बाद किसी ने पास के एक अखाड़े का भी पता बता दिया। हफ्ते भर बाद वो किशोर एक अखाड़े में पढ़ायी से बचा हुआ सारा समय बिताने लगा।

कुछ महीने यही धर्मशाला-विद्यालय-अखाड़ा-धर्मशाला वाला कार्यक्रम चलता रहा लेकिन नियति को कुछ और ही मंज़ूर था। एक शाम अखाड़े से लौटते हुए उस किशोर को, जो अखाड़े में वार्जिश करते हुए अब हट्टा-कट्टा किशोर सा दिखने लगा था, एक सीटी की आवाज़ सुनायी दी। उसने मुड़कर देखा तो एक भद्दी से आवाज़ भी सुनायी दी।

“ओ छमिया..!!”

अब वो किशोर रुक गया और आवाज़ की और बढ़ चला। पास गया तो देखा गुंडे-मवाली जैसी शक्ल के तीन-चार लड़के एक लड़की को छेड़ रहे हैं।